सपनों को लगाए पंख

गीता नौटियाल
सहायक अध्यापिका
राजकीय उच्च प्राथमिक बैनोली, तुनेटा
जखोली, रुद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड

प्रधानाध्यापक	–	**राजेन्द्र सिंह पंवार**
सहायक अध्यापिका	–	**अमीता रौथाण**
भोजन माता	–	**चंपा देवी**
नामांकन	–	**18**

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बैनोली ब्लॉक जखोली जिला रुद्रप्रयाग में स्थित है। रुद्रप्रयाग जनपद मुख्यालय से इसकी दूरी लगभग 18 किलोमीटर है। बैनोली गाँव से होते हुए विद्यालय जाने का रास्ता है। गाँव के साफ सुथरे वातावरण से मन ताजगी का अहसास करता है। अधिकांश घरों के सामने माल्टा के पेड़ फलों से लदे हुए हैं। जैसे ही आप विद्यालय में प्रवेश करते हैं बच्चों द्वारा बनाई गई क्यारियाँ आपका ध्यान खींचती हैं, जिनमें रंग–बिरंगे खिले फूल मानो हर आने वाले का स्वागत कर रहे हों। विद्यालय प्रांगण साफ–सुथरा और वृक्षों से आच्छादित है। सुबह की प्रार्थना सभा में संगीतमय गीत की प्रस्तुति विद्यालय के वातावरण में ताजगी ला देती है। इन सभी प्रयासों के पीछे शिक्षिका गीता नौटियाल की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आपके प्रयासों और शिक्षक बनने की यात्रा के बारे में जब जान पाया तो आपने बताया कि मेरा बचपन से ही शिक्षक बनने का सपना था। जब मैं अपने पिताजी से जानना चाहती थी कि शिक्षक बनने के लिए क्या करना पड़ता है? तो वह कहते कि खूब पढ़ना पड़ता है। फिर मैंने हिंदी विषय से एम.फिल.की डिग्री प्राप्त की और एक प्राइवेट विद्यालय में शिक्षक के रूप में काम करने लगी। इसी बीच मेरा नाम अंशकालिक शिक्षक के रूप में सरकारी सेवा में आ गया। पिता जी को मेरी नियुक्त का पत्र प्राप्त हुआ तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह पत्र देने के लिए मेरे स्कूल आ रहे थे, वह अपनी खुशी मुझसे कह भी न पाए और रास्ते में ही उनका एक्सीडेंट हो गया। मुझे सूचना मिली की आपके पिता जी का एक्सीडेंट हो गया है। मेरे पहुँचने से पहले ही पिता जी नहीं रहे। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि पिता जी नहीं रहे। किन्तु इस घटना के बाद शिक्षक बनना मेरा सपना नहीं लक्ष्य बन गया। मैंने अपने सपने को 1995 में पंख लगा दिए। अब मेरा लक्ष्य है मेरे विद्यालय का हर बच्चा सीखे इसके लिए निरंतर प्रयत्नशील रहती हूँ। शिक्षा जगत ने मेरे प्रयासों पर मुझे शिक्षक जीवन की अनमोल उपलब्धि दी और 5 सितम्बर 2014 को शिक्षक दिवस पर राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया।

वर्तमान में सरकारी स्कूलों के प्रति सामाजिक नजरिये में बदलाव एवं गिरते नामांकन के कारणों पर जब चर्चा की तो आपने बताया, बैनोली गाँव में लगभग 40 से 42 परिवार रहते हैं। मुझे इस बात का दुःख है कि पिछले दो तीन सालों में गाँव से लगभग 10–12 परिवार आजीविका के लिए पलायन कर चुके हैं। जिसका प्रभाव गाँव पर तो पड़ा ही उससे हमारा स्कूल भी अछूता नहीं रहा। जहाँ विद्यालय में 35 से 40 बच्चों की संख्या होती थी, वह संख्या 18 बच्चों की हो गई है। गाँव से

पलायन एक महामारी की तरह पहाड़ों को अपनी चपेट में ले रहा है। जिससे मेरे पहाड़ों के गाँव और स्कूल खाली होते जा रहे हैं। मैंने पूछा कि आपका मूल शिक्षण विषय हिंदी भाषा है, भाषा को लेकर आपका क्या मानना है? आपका मानना है कि भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है बल्कि दुनिया को जानने समझने का माध्यम भी है। मेरा विषय हिंदी भाषा है तो इस विषय से विशेष लगाव भी है। भाषा पर काम करते हुए देखा कि भाषा बच्चों से प्रेम करने का माध्यम है। भाषा ही है जो बच्चों को हमारे करीब लाती है और दूर भी ले जाती है। हमारी भाषा बच्चों को दोस्त बना लेती है जिससे वह अपनी बात बेझिझक कहते हैं। बैनोली गाँव नहीं मेरा घर है, जिसके कारण सभी बच्चों के परिवार के बारे में जानती हूँ। मैं बच्चों से बातचीत को बहुत महत्व देती हूँ। जिससे उनके घर, सुख–दुःख के बारे में जानने पर एक लगाव बनता है। बच्चा अगर ठीक से नहीं बोलता तो मुझे पता लग जाता है कि इसे कुछ दिक्कत है। फिर मैं उसकी समस्या जानकार उसका निवारण करने का प्रयास करती हूँ। ऐसी ही एक घटना है, जुलाई में पूजा नाम की एक लड़की कक्षा 6 में आई। वह बात करने में भी डरी रहती थी। मेरी चिंता पूजा के गुमसुम रहने से बढ़ती थी। मैंने कारणों का पता लगाना शुरू किया तो पता लगा कि घर के हालात ठीक नहीं थे। घर में उसे पढ़ने का वक्त ही नहीं मिलता था। स्कूल की पढाई में भी उसका मन नहीं लगता था। पूजा का आत्मविश्वास कैसे लौटे यह मेरी बड़ी चिंता थी। उसके लिए मैंने प्रयास करना शुरू किया। पूजा को स्कूल में ही काम पूरा करने का समय और प्रोत्साहन देना शुरू किया। हमारा स्नेह पाकर उसमें एक नई चमक आई। उसमें तेजी से बदलाव आना शुरू हुआ, आज वह एक होशियार बच्ची के रूप में आगे की पढ़ाई कर रही है।

बच्चे अर्थपूर्ण एवं आनंददायक तरीके से सीखें इसके लिए आपका क्या प्रयास रहता है? आपने बताया कि सुबह की सभा से इसकी शुरुआत हो जाती है जिसमें बालगीत, चुटकुले, पहेलियाँ, स्थानीय समाचार आदि को बच्चों द्वारा अपने शब्दों में पिरोकर सुनाया जाता है। इससे बच्चों की झिझक दूर होती है और अपनी बात रखने की कला भी निखरती है। मेरा प्रयास रहता है कि बच्चे सिर्फ पढ़ें ही नहीं उसके अर्थ को भी समझ पायें। इसके लिए उन्हें व्यावहारिक जीवन के अनुभव से जोडती हूँ। जिन बच्चों को पढ़ने–लिखने में दिक्कत होती है उनके साथ कहानी कविता को लेकर काम करती हूँ। कहानी को हावभाव के साथ सुनाना फिर मेरे द्वारा पढ़ना, सीखी गई ध्वनि से नए शब्द एवं वाक्य बनवाना। इसके साथ ही प्रत्येक दिन हिंदी की अलग–अलग गतिविधियां करवाती हूँ जैसे– कविता पाठ, कहानी सुनाना, अन्ताक्षरी, सुलेख प्रतियोगिता इत्यादि। इसके साथ ही बच्चों को अपनी बात रखने के लिए चंदामामा नाम से मासिक पत्रिका निकालते हैं। जिसका सम्पादकीय लिखने से लेकर सामग्री जुटाने का कार्य बच्चे ही करते हैं। हमारे बच्चों की कई रचनाएँ फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित 'छपाक' पत्रिका का हिस्सा भी बनती हैं। इसके साथ ही हमारे विद्यालय में बच्चों के लिए भाषा का कोना बनाया गया है। पुस्तकालय का उपयोग बच्चों के लिए सुलभ बनाया है। बच्चे ही पुस्तकालय का संचालन करते हैं और किताबें इश्यू कर घर भी ले जाते हैं। जिसके कारण बच्चों के शब्द भंडार, कल्पना, तर्क करने की क्षमता में वृद्धि हुई है। मैंने अपने घर पर भी पुस्तकालय

बनाया है जिसका उपयोग मैं तो करती ही हूँ मेरे बच्चे भी करते हैं। बच्चों के उपयोग के लिए हमने ऐसी व्यवस्था बनाई कि जब भी उनको समय मिले वे आएं, पढ़ें और किताब को घर भी ले जाएं। इसके साथ स्कूल की उपलब्धि में देखा जाय तो राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में हमारे बच्चों ने भाग लिया जैसे– सुलेख, कविता पाठ, अन्ताक्षरी आदि।

बच्चों से जब बातचीत हुई तो अधिकांश बच्चों का प्रिय विषय भाषा के साथ गणित भी है। इसके बारे में मैंने जब आप से जाना, तो आपने बताया कि गणित एक कठिन विषय है ये एक सर्वमान्य कथन यत्र–तत्र सुनाई देता है। प्रायः देखा जाता है कि गणित विषय का शिक्षण अन्य विषयों के शिक्षण से इत्र देखा या समझा जाता है। शिक्षक हो या शिक्षार्थी सभी गणित विषय को पढ़ने–पढ़ाने या सीखने–सिखाने में अनुशासन एवं शांत वातावरण की दुहाई देते हैं। शायद यही बिन्दु गणित शिक्षण में भय उत्पन्न कर आत्मविश्वास को विचलित कर देता है। वास्तव में अधिकांश बच्चे गणित शिक्षण में रूचि नहीं ले पाते, यही कारण है कि गणित में कुछ बच्चे महारत हासिल कर लेते हैं और कुछ परीक्षा पास करना ही अपना मुख्य ध्येय समझ बैठते हैं। मेरा मन्तव्य है कि गणित की कक्षा को ऐसा जीवंत बनाया जाये कि बच्चा स्वयं सीखे, स्वयं सामान्यीकरण करे तथा स्वयं ही निष्कर्ष तक पहुंचने का प्रयास करे। गणित की कक्षा एक विशेष प्रकार की प्रयोगशाला या ज्ञान निर्माण शाला बने जहां शिक्षक व विद्यार्थी समान रूप से सक्रिय भागीदार हों, कोई भी किसी पर सीखने व सिखाने की जिम्मेदारी न थोपे। उदाहरण स्वरुप यदि हम बच्चे को रूपये पैसे की जानकारी देना चाहते हैं तो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की पैकिंग कवर को इकठ्ठा करें और इससे आभासी मुद्रा बनायें। बच्चे लेन–देन की प्रक्रिया को खेल–खेल में सीखते हैं और सहज ही रूपये पैसे की अवधारणा पर समझ बना लेते हैं। इस क्रम को और आगे बढ़ाते हुए हम विद्यालय में मध्यान्ह भोजन में लगने वाली वस्तुओं की सूची तैयार कराते हैं। जिससे नाप–तोल की समझ, आकड़ों की सारणी बनाने आदि पर रुचिपूर्ण गणित शिक्षण कार्य किया जाता है। इस प्रकार की गणित की कक्षा भय, तनाव दबाव से कोसों दूर होती है। वास्तव में गणित शिक्षण, मात्र एक विषय नहीं, बल्कि हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग भी है। हमारे दैनिक जीवन को गणित किस प्रकार प्रभावित करता है इसको सार्थक करने के लिए हमारी कक्षा बच्चों के लिए एक आनंददायक मंच तैयार करती है जहाँ बच्चा अनुमान व कल्पना को पंख लगाकर मूर्तता से अमूर्तता

की खोज में निकल पड़ता है। गणित की कक्षा जितनी रुचिकर एवं आनंददायी व खुली सोच पर आधारित होगी उतना ही छात्र गणित से नजदीकियां बनाकर अपने ज्ञान को समृद्ध व तार्किक बनायेंगे।

आप बच्चों के साथ जो भी प्रयास करती हैं वह बच्चों के माध्यम से समुदाय तक पहुँचता है। विद्यालय प्रबंध समिति की अध्यक्षा विनीता देवी स्नातक तक शिक्षा प्राप्त हैं, वह विद्यालय के विकास में सदैव तत्पर रहती हैं। समिति के साथ मिलकर योजना बनाती हैं और उसे लागू करने का प्रयास करती हैं। समुदाय के प्रयास से विद्यालय को बेहतर करने में काफी सहयोग मिला है। समिति ने मिलकर यह नियम बनाया है कि बच्चे के जन्म दिन पर अभिभावक द्वारा विद्यालय में वृक्षारोपण किया जायगा जिसके कारण आज हमारा विद्यालय पेड़–पौधों से हरा–भरा है।

गीता जी इन सभी कार्यों का श्रेय प्रधानाचार्य श्री राजेन्द्र सिंह को देती हैं। पर प्रधानाचार्य जी का मानना है कि गीता नौटियाल जी नित नये–नये नवाचार करती हैं जिससे विद्यालय के बच्चों को काफी लाभ मिला है। आप इसका श्रेय टीम भावना को भी देते हैं। हम सभी के प्रयासों से अधिकांश बच्चों के सीखने का स्तर अच्छा हुआ है। जिसका परिणाम है कि हमारे बच्चे विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान बना पा रहे हैं।

(गीता नौटियाल से अनूप शुक्ला की बातचीत पर आधारित)